समर्थ बनाती 'फिर से' की स्मृतियां

AM 11.02.2018
(Rev 30.04.83)

1. फिर से भगवान अवतरित हो चुका है।
2. फिर से भगवान की हमारे ऊपर दृष्टि पड़ी है।
3. फिर से हम नजर से निहाल हो गये हैं।
4. फिर से हम भगवान की नजरों में समा गये हैं।
5. फिर से भगवान ने अपना वरदानी हाथ हमारे सिर पर रख दिया।
6. फिर से भगवान ने हमारे सारे दु:ख-दर्द हर लिये।
7. फिर से भगवान ने हमें अतिन्द्रिय सुख के झूले में झूलना सिखा दिया।
8. फिर से सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान मिल गया।
9. फिर से ज्ञान का तीसरा नेत्र खुल गया।
10. फिर से दिव्य दृष्टि का वरदान मिल गया।
11. फिर से वरदानों से भरपूर कर दिया।
12. फिर से मुझ आत्मा का अलौकिक श्रृंगार हो गया।
13. फिर से अमृतवेला का सुख पाया।
14. फिर से भगवान से सर्व संबंध जुड़ गये।
15. फिर से विजयी बनने का वरदान मिला।
16. फिर से माया परास्त हो रही है।
17. फिर से रावण मरने के कगार पर है।
18. फिर से भगवान हमारे बिना बेचैन हो रहा है।
19. फिर से भगवान हमारी पालना करना रहा है।
20. फिर से भगवान हमें देख-देख खुश हो रहा है।
21. फिर से भगवान की अखियों में प्रेम के मोती छलकते दिखाई दिए।
22. फिर से भगवान हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।
23. फिर से भगवान हमारे देवत्व को जागृत कर रहा है।
24. फिर से भगवान ने हमें ताज, तख्त व तिलकधारी बना दिया है।
25. फिर से भगवान ने हमें स्वराज्य अधिकारी बना दिया है।
26. फिर से भगवान ने हमें अनेक स्वमानों की माला पहना दी है।
27. फिर से भगवान से हम अपने दिल की बातचीत कर रहे हैं।
28. फिर से भगवान के हम आशिक बन गये हैं।
29. फिर से हमें देख भगवान का दिल पिघल गया।
30. फिर से भगवान हमारे गीत गा रहा है।
31. फिर से हम भगवान के गीत गा रहे हैं।
32. फिर से हम अपनी यादगार देख रहे हैं।
33. फिर से भगवान हमें विश्व का मालिक बना रहा है।
34. फिर से भगवान की हमारे पर अपार कृपा हुई है।

35. फिर से हमारे ऊपर भगवान के ब्लैसिंग की वर्षा हो रही है।
36. फिर से भगवान हमें देख मुस्करा रहा है।
37. फिर से भगवान ने हमें पवित्र भव योगी भव का वरदान दिया है।
38. फिर से हम भगवान को भोग लगा रहे हैं।
39. फिर से ब्रह्मा भोजन खाकर हृदय का शुद्धिकरण हो रहा है।
4०. फिर से बेहद का ब्राह्मण परिवार मिला है।
41. फिर से भगवान ने हमारे लिए अविनाशी प्राप्तियों का भंडारा खोल दिया है।
42. फिर से हम भगवान पर कुर्बान गये हैं।
43. फिर से भगवान हमारे पर कुर्बान गयें हैं।
44. फिर से कल्याणकारी ड्रामा रिपीट हो रहा है।
45. फिर से मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त हो रहा है।
46. फिर से हमारे हिसाब किताब चुक्तु हो रहे हैं।
47. फिर से ईश्वरीय सेवा कर पुण्य जमा करने का मौका मिला है।
48. फिर से हमें ईश्वरीय पढ़ाई पढने का डायमंड अवसर मिला है।
49. फिर से वाह, हम गॉडली स्टूडेंट बन गये!
50. फिर से जीवन में नए उमंग-उत्साह का संचार हो रहा है।
51. फिर से अनेकात्माओं को सुख, शान्ति का रास्ता दिखा रहे हैं।
52. फिर से माया अपना दम तोड़ रही है।
53. फिर से रावण राज्य की समाप्ति हो रही है।
54. फिर से ज्ञान गंगायें संसार में ज्ञान अमृत बांट रही हैं।
55. फिर से हम योग अग्नि से अपने विकर्मों को भस्म कर रहे हैं।
56. फिर से शिवशक्तियां शिव का ध्वज लहरा रही हैं।
57. फिर से योग अग्नि की ज्वाला प्रज्वल्लित हो उठी है।
58. फिर से विश्व में शान्ति की स्थापना हो रही है।
59. फिर से विनाश ज्वाला भड़केगी।
60. फिर से भगवान और बच्चों का मिलन हो रहा है।
61. फिर से कल्प की पुनरावृत्ति हो रही है।
62. फिर से माया नमस्कार कर, विदाई ले रही है।
63. फिर से महान, ब्राह्मण आत्माओं का श्रेष्ठ संग मिला।
64. फिर से आत्मा को ज्ञान योग के पंख मिल गये हैं।
65. फिर से आत्मा तीनों लोकों की सैर कर रही है।
66. फिर से फरिश्ता बन विश्व की परिक्रमा कर रहे हैं।
67. फिर से आत्मा को सच्ची खुशी मिली है।
68. फिर से मनमनाभव का मंत्र मिला है।
69. फिर से आत्मा याद की यात्रा पर निकल पड़ी है।
70. फिर से सर्व आत्माओं के वापस घर जाने का समय आ गया है।
71. फिर से नये विधिविधान बन रहे हैं।
72. फिर से आत्मा को रूहानी खुमारी चढी है।

73. फिर से आत्मा प्रफुल्लित हो रही है।
74. फिर से एकमत, एक भाषा, एक राज्य की स्थापना हो रही है।
75. फिर से नये संकल्पों का खजाना मिला है।
76. फिर से संगमयुग की मौज का अनुभव कर रहे हैं।
77. फिर से महान आत्माओं का संग मिला है।
78. फिर से ज्ञान-योग की कक्षाएं अटेन्ड करने का सुअवसर मिला है।
79. फिर से मधुबन की बगिया महक उठी है।
80. फिर से मधुबन में ब्राह्मणों की रिमझिम लगी हुई है।
81. फिर से मधुबन के आंगन में खुशियों की बरसात हो रही है।
82.-फिर से अनेक आत्मायें मधुबन में अपनी प्यास बुझा रही हैं।
83. फिर से आत्मायें अपने घर मधुबन में पहुंच रही हैं।
84. फिर से 5000 वर्ष का इतिहास अपने आप को दोहरा रहा है।
85. फिर से संसार बदल रहा है।
86. फिर से हम अपनी यादगार देख रहे हैं।
87. फिर से हमारा मरजीवा जन्म हुआ है।
88. फिर से भगवान का खत आ रहा है।
89. फिर से हम बेहद के यज्ञ में आहुतियां डाल रहे हैं।
90. फिर से आत्मा सतोप्रधान बन रही है।
91. फिर से आत्मा सम्पूर्ण निर्विकारी बन रही है।
92. फिर से ज्ञान का मनन चिंतन कर रहे हैं।
93. फिर से पुरानी दुनिया राहु के ग्रहण से मुक्त हो रही है।
94. फिर से अज्ञान अंधकार समाप्त हो रहा है।
95. फिर से परमात्म प्यार की बरसात हो रही है।
96. फिर से प्रभु मिलन की वेला आ गई है।
97. फिर से परमात्म प्रत्यक्षता हो रही है।
98. फिर से अंधों को ज्ञान का आईना, ज्ञान की लाठी मिली है।
99. फिर से भगवान की वाणी कानों में गूंज रही है।
100. फिर से भगवान इस पुरानी दुनिया में मेहमान बनकर आया है।
101. फिर से आत्माओं और परमात्मा की महफिल जमी है।
102. फिर से परमात्मा की आर्शीवाद से आत्मा भावविभोर हो रही है।
103. फिर से आत्मा परमात्मा से प्यार कर बैठी है।
104. फिर से अशान्त आत्माओं को शान्ति प्राप्त हुई है।
105. फिर से परमात्म खजानों से आत्मा मालामाल हो गई है।
106. फिर से गीता एपीसोड रिपीट हो रहा है।
107. फिर से आत्मा की परमात्मा से सगाई हुई है।
108. फिर से आत्मा अपनी सर्वोच्च अवस्था को पा रही है।

..... **ओम शान्ति** .....